उद्देशिका

वेदमूलक इस भारतीय ज्ञान की शाश्वत परंपरा के अनुसार यह समग्र ब्रह्मांड काल प्रवाह से प्रवाहित होता हुआ प्रकृति के नियमों के पालन में तल्लीन है। काल को छोड़कर कोई भी इस जगत में क्षण मात्र भी स्थिर नहीं रह सकता। काल ही अवस्‍था अनुसार इस सृष्टि का सृजन, पालन, एवं विनाश करता हुआ परमब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित होता हुआ जो वेदांग स्वरुप में प्रतिष्ठित ज्योतिषशास्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य है।

परिभाषा के अनुसार ब्रह्मांड के ग्रह नक्षत्र आदि पिंडों की गति स्थिति एवं प्रभाव के प्रतिपादक शास्त्र को ज्योतिषशास्त्र कहते हैं। यह भारतीय ज्योतिष शास्त्र अध्यात्म, ज्ञान एवं विज्ञान का एक ऐसा स्वरूप उपस्थित करता है जो किसी भी व्यक्ति को किसी भी नियम विशेष पर चलने हेतु बाध्य नहीं करता। अपितु ग्रह राशि नक्षत्रों के परस्पर संबंध द्वारा जीवन एवं इस लोक के संभाव्यमान समस्त अशुभों का ज्ञान कर वेद विहित नियमों के अनुसार प्रशमन का उपाय सूचित करता हुआ जीवन पथ को निष्कंटक एवं प्रशस्त बनाता है। यहां लोक विश्रुत भाग्य भी पूर्णतया पूर्व जन्म में अर्जित कर्मों का परिणत वर्तमान स्वरूप ही है, जो गणित एवं अंतरिक्ष विज्ञान मूलक गणनाओं पर केंद्रित सिद्धांत का प्रतिफल है। यहां हम इसका अध्ययन सिद्धांत संहिता एवं होरा इन तीन स्कंध में विभक्त कर ही करते हैं। इसके सिद्धांत स्कंध में एक ओर जहां पृथ्वी का गोलकत्व एवं अक्ष भ्रमण, शून्य का वैशिष्ट्य, परिधि व्यास का संबंध, काल की लघुतम से महत्तम इकाई, भूमि आकर्षण सिद्धांत आदि अन्य गणितीय एवं वैज्ञानिक सिद्धांतों के बीज निहित है तो वहीं संहिता में समष्टिगत फल की अवधारणा है। होरा स्कंध तो पृथक रूप में जीवनचर्या की सुख-दुख सहित विवेचन कर जन्मार्जित कर्मों की वर्तमान जीवन में उपस्थिति के स्वरूप को दिखाने वाला है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वास्तु विद्या आदि इसके अवयव तो निसंदेह रूप में पूर्णतया हितकारी हैं।

यह ज्योतिष विभाग ज्योतिषशास्त्र के वास्तविक स्वरुप के अध्ययन अध्यापन सहित इसमें अंतर्निहित विषयों के अद्यतनीकरण एवं अन्वेषण में संपूर्ण निष्ठा के साथ तल्लीन होकर महामना के परम ध्येय वाक्य **''कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्''** के अनुपालन में मन क्रम वचन से संकल्पित है।

**English**

According to the eternal tradition of this Indian knowledge based on vedas, this whole universe flowing through the flow kala is engrossed in the compliance of the laws of Nature.

Anyone except the Kala cannot remain stable even a moment in this world.

According to the phase the Kala become distinguished as the supreme Brhma while creation, observance and destruction of this universe, which is the main manifestation of Astrology in the form of vedanga.

According to the definition, the Shastra which define the motion, placket and impact of planet, constellation of the universe that’s called Jyotish Shastra. The Indian Jyotish Shastra represent such a type of spirituality, knowledge and science which does not force any one to follow the particular rule.

But after knowing the entire probable inauspicious it shows the solution of condensation by the interrelationship of the planets, the constellations and signs. it makes the life problem free and peace full .

The well-known destiny is also the current form of the completed deeds in past life, which is a reflection of the theory based on mathematical and Astronomical origin calculations. We study it after dividing in three wings (1)Siddhant, (2)Samhita and (3)Hora.

While on one hand there is the origin of earth’s sphericity , axis movement, the specificity of the zero, relation of perimeter and diameter, the smallest and greatest unit of time, attraction of earth, and mathematical and scientific principals in Siddhant Skandh while on another hand Samhita describes the corporate result of planets. Hora Skandh Separately reflects the result of last birth’s good and bad activities In the face of presence of Happiness and sorrow in present birth. Vastu vidya and its components are completely beneficial in current perspective. This astrology department, with the teaching of the actual form of astrology, is being engrossed with complete allegiance in the updating and exploration of

the underlying subjects, the ultimate goal of the Mahamana is conjectured with the word "कामये दुःख-तप्तानां प्राणिनामार्तिनासनम् " in accordance with the word order.